بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **07.04.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

अलजज़ायर के अहमदियों को अत्याचार का निशाना बनाया जा रहा है

इन निर्दोषों तथा मज़लूमों को हमें अपनी दुआओं में याद रखना चाहिए, अल्लाह तआला उन्हें दृढ़ता प्रदान करे

अल्लाह तआला ने उम्मत-ए-मुहम्मदियः के सुधार के लिए अपने वादे के अनुसार जिसको भेजना था और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने जिस सच्चे ग़ुलाम के आने की पेशगोई फ़रमाई थी, उसे तलाश करें।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का विरोध तो उस समय से हो रहा है जब अभी यथावत रूप से जमाअत की स्थापना भी नहीं हुई थी तथा आप अलैहिस्सलाम ने बैअत भी नहीं ली थी। मुसलमानों ने भी और ग़ैर मुस्लिमों ने भी अपना पूरा ज़ोर जमाअत के विरोध में लगाया तथा अब तक लगा रहे हैं। आज तो अधिक सक्रिय मुसलमान हैं परन्तु अल्लाह तआला आपकी जमाअत को बढ़ाता चला जा रहा है। अब अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत विश्व के 209 देशों में स्थापित है। विशेष रूप से मुस्लिम देशों में, जहाँ भी लोग जमाअत की ओर आकर्षित होते हैं वहाँ यथावत नियोजित रूप से विरोध आरम्भ हो जाता है। कुछ राजनैतिक आलिम तथा उनके सम्पर्क सूत्र प्रशासनिक कार्यकर्ता अपितु न्यायालयों के जज भी विरोध का अंग बन जाते हैं।

आजकल अलजज़ायर के अहमदियों को अत्याचार का निशाना बनाया जा रहा है। जज साहिबान भी यही कहते हैं कि यदि तुम कह दो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मसीह मौऊद होने का दावा झूठा है तथा वे मसीह मौऊद नहीं हैं बल्कि नऊज़ु बिल्लाह, इस्लाम की विरोधी शक्तियों के एजेंट हैं और इस्लाम विरोधी शक्तियों की शरण तथा पश्चिमी देशों की शरण उन्हें प्राप्त है तथा उन्हीं की ओर से ये खड़े किए गए थे, विशेष रूप से अंग्रेज़ों की ओर से तो हम तुम्हें बरी कर देते हैं अन्यथा फिर जेल तथा जुर्माने के दंड के लिए तय्यार हो जाओ और फिर अन्याय करके उनको फिर जेलों में डाला जा रहा है तथा बड़े बड़े जुर्माने भी किए जा रहे हैं। उन निर्दोषों तथा मज़लूमों को हमें अपनी दुआओं में याद रखना चाहिए। अल्लाह तआला उन्हें दृढ़ संकल्प भी अता फ़रमाए तथा इन कष्टों से भी बचाए।

इसी प्रकार पाकिस्तान के अहमदियों को भी अपनी दुआओं में याद रखें, वहाँ भी पंजाब में विशेष रूप से यथावत योजना बद्ध रूप से अत्याचार किए जा रहे हैं। मुस्लिम देशों के अन्दर जो उपद्रव की अवस्था है तथा एक देश की दूसरे देश के साथ जो सम्बंधों की अवस्था है, बुद्धि रखने वालों के लिए यह अवस्था ही इस बात पर विचार करने के लिए पर्याप्त है और होनी चाहिए कि इन अवस्थाओं में अल्लाह तआला ने उम्मत-ए-मुहम्मदियः के सुधार के लिए अपने वादे के अनुसार जिसको भेजना था और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने जिस सच्चे ग़ुलाम के आने की भविष्यवाणी फ़रमाई थी, उसे तलाश करें। जबकि अल्लाह तआला और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बताई हुई निशानियाँ भी पूरी हो चुकी हैं और हो रही हैं जो मसीह मौऊद के आने से सम्बंधित हैं और यही एक रास्ता है जो मुसलमानों की प्रतिष्ठा को पुनः

स्थापित कर सकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- मैं ख़ुदा के वादे के अनुसार मसीह मौऊद होकर आया हूँ चाहो तो स्वीकार करो, चाहो तो रद्द करो परन्तु तुम्हारे रद्द करने से कोई लाभ नहीं होगा। ख़ुदा तआला ने जो निश्चय किया है वह होकर रहेगा। जो लोग मेरा विरोध करने वाले हैं वे मेरा नहीं ख़ुदा का विरोध करते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः जमाअत की प्रगति में जो विरोध हो रहा है यह विरोध न पहले कुछ बिगाड़ सका और न भविष्य में इन्शाअल्लाह तआला कुछ बिगाड़ सकेगा। अल्ला तआला की सहायता हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ सदैव रही तथा सदैव हमने यही देखा कि दुश्मन नाकाम व असफल रहा तथा हो रहा है और भविष्य में इन्शाअल्लाह तआला होता रहेगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- जहाँ विरोध होता है वहाँ तबलीग़ के रास्ते भी खुलते हैं। फ़रमाया- अलजज़ायर की जमाअत कोई अधिक पुरानी जमाअत नहीं परन्तु अल्लाह तआला उनको इस विरोध के द्वारा ही जहाँ ईमान में दृढ़ता प्रदान कर रहा है वहाँ उनके लिए तबलीग़ के रास्ते भी खोल रहा है। वहाँ के अहमदी लिखते हैं कि हम परेशान थे कि इस देश में तबलीग़ किस प्रकार होगी तो अल्लाह तआला ने इस विरोध के द्वारा स्वयं ही तबलीग़ की योजना बना दी। अलजज़ायर के अहमदी कहते हैं कि यदि कुछ लोग नकारात्मक प्रभाव ले रहे हैं तो अनेक ऐसे भी हैं जो जमाअत और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे से परिचित हुए हैं तथा समझते हैं कि जमाअत के विरोध में जो कुछ हो रहा है वह अनुचित है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- कि आपके आने का यही समय था तथा अल्लाह तआला के विधान के अनुसार ही आप आए हैं ताकि इस्लाम की डौलती कश्ती को संभाला मिले। स्वयं मुसलमानों के भी बयान अख़बारों में छपते हैं अपने भाषणों में भी ये वर्णन करते हैं तथा इस बात की गवाही देते हैं कि मुस्लिम उम्मत को संभालने के लिए कोई आना चाहिए परन्तु यह भी साथ ही कह देते हैं कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद के अतिरिक्त कोई अन्य हो।

अतः जो ख़ुदा तआला की ओर से होने का दावा कर रहा है, उसे ये मानते नहीं बल्कि इंकार कर रहे हैं तथा दुश्मनी कर रहे हैं। लाखों लोग प्रतिवर्ष विरोध के बावजूद अहमदियत में जो दाख़िल होते हैं यह इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह तआला की सहायता व समर्थन अहमदिया जमाअत के साथ है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ है। अनेक ऐसे हैं जो अपने वृत्तांत लिखते हैं कि किस प्रकार अहमदी हुए तथा उनकी घटनाओं को पढ़ कर आश्चर्य होता है कि किस प्रकार अल्लाह तआला नेक प्रकृति के लोगों के लिए स्वीकार करने का प्रबन्ध फ़रमा रहा है। मैं कुछ वृत्तांत पेश करता हूँ।

यह पहली घटना जो मैं पेश करुंगा यह अलजज़ायर की ही है जहाँ इस समय विरोध में तीव्रता है। लिखने वाले कहते हैं कि अहमदियत के साथ परिचय से बहुत पहले मैंने एक रात सपने में देखा कि एक ऊँची छत वाले बड़े लम्बे चौड़े हॉल में बहुत से लोगों के साथ एक लाईन में खड़ा हूँ जिसके एक सिरे पर दो व्यक्ति खड़े हैं। हमारी लाईन में से प्रत्येक अपनी बारी आने पर उन व्यक्तियों में से दाएँ ओर वाले व्यक्ति से गाढ़े प्रेम के साथ हाथ मिलाकर हॉल के द्वार की ओर चला जाता है। ऐसा लगा कि यह लम्बी लाईन उन दोनों में से एक व्यक्ति के साथ हाथ मिलाने के लिए विशेष रूप से बनाई गई है। कहते हैं, मैं दूर से यह दृश्य देखकर कहता हूँ कि लोग दोनों के बजाए केवल एक व्यक्ति से हाथ क्यूँ मिलाते हैं इतने गाढ़े प्रेम से दोनों से क्यूँ नहीं मिलाते तो निकट पहुंचने पर मैं देखता हूँ कि उनमें से एक व्यक्ति सफ़ेद दाढ़ी वाला है जबकि उसके दाएँ ओर वाला एक मध्यम क़द तथा गन्दमी रंग का व्यक्ति है जिसके सिर और दाढ़ी के बाल काले हैं। कहते हैं जब मेरी बारी आई तो मैंने सफ़ेद दाढ़ी वाले व्यक्ति की ओर हाथ बढ़ाया तो उसने मुझे काली दाढ़ी वाले तथा गन्दमी रंग वाले व्यक्ति की ओर संकेत किया कि इनके साथ सलाम करो तो मैंने बड़े प्रेम के साथ उनसे हाथ मिलाया और कहते हैं कि उसके साथ ही मेरा दिल उस व्यक्ति के प्रेम में डूब गया। वह मुझे देखकर मुस्कुराया, उसकी मुस्कुराहट में ऐसा जादू था कि मैं आज तक उस मुस्कुराहट को भुला नहीं सकता। फिर कहते हैं, जब अहमदियत से परिचय हुआ और मैंने एम टी ए देखना शुरु किया तो उन्हीं आरम्भिक दिनों में एक दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चित्र दिखाया गया, फिर कुछ देर के बाद मेरा चित्र सामने आया तो कहते हैं, दोनों को देखकर मुझे अपना सपना याद आ गया। सपने में दिखाया जाने वाला व्यक्ति, सफ़ेद दाढ़ी वाला जो व्यक्ति था, वह मैं था (अर्थात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम काली दाढ़ी वाले थे जिनके साथ

सब मिल रहे थे और मैं भी इशारा कर रहा था कि इनको मिलो। कहते हैं कि इसके पश्चात अहमदियों से इन्टर नैट पर सम्पर्क किया, विभिन्न सवाल किए जिनके जवाब पाने के बाद मैंने बैअत कर ली।

फिर एक साहब जिनके वृत्तांत को देखकर लगता है कि अल्लाह तआला घेर कर उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में शामिल करना चाहता था, कोई नेक बात पसन्द आई अल्लाह तआला को। ये मिस्र के हैं अब्दुल हादी नाम है, ये कहते हैं कि अहमदियत से परिचय एम टी ए अलअर्बिय्यः के द्वारा हुआ। जो प्रोग्राम था बड़ा अच्छा था। परन्तु कहते हैं कि जमाअत के संस्थापक इमाम की नबुव्वत और वह्यी तथा इलहाम होना समझ में नहीं आता था। कहते हैं कि मैंने बार बार प्रोग्राम अलहवारिल मबाशिर में फ़ोन करने का प्रयास किया, परन्तु हर बार असफलता का मुंह देखना पड़ा। सम्पर्क नहीं होता था और उद्देश्य केवल एक प्रश्न का उत्तर लेना था, और प्रश्न यह था कि क्या जमाअत के संस्थापक अन्य नबियों की भांति मअसूम (दोष मुक्त) हैं? और क्या उनको इलहाम होता है? कहते हैं कि यदि मुझे इसका उत्तर हाँ में दिया जाता तो उसी दिन उस चैनल को अपनी सूचि से निकाल देता, क्यूँकि उस समय मेरी यही आस्था थी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद वह्यी बन्द है और इसका दावा करने वाला झूठा है। किन्तु ख़ुदा तआला के विशेष आयोजन से ऐसा हुआ कि मैं कभी भी प्रोग्राम में कॉल करने में सफल नहीं हो सका जिसका परिणाम यह हुआ कि मैं एम टी ए देखता रहा तथा धीरे धीरे समस्त बातों के साथ ख़त्मे नबुव्वत की समस्या भी मेरी समझ में आती गई यहाँ तक कि मेरे सामने इमामुज़्ज़माँ मसीह मौऊद तथा इमाम महदी की बैअत करने के अतिरिक्त कोई रास्ता न बचा। इस प्रकार मैंने बैअत फ़ॉर्म भर कर भेज दिया। बैअत के बाद मैं चाहता था कि यह सूचना दूसरों तक भी पहुंचे। अतः इसके लिए मैंने अपने एक निकट के मित्र का चयन किया जिसके विषय में मुझे बड़ा अच्छा गुमान था कि वह मेरी बात सुनेगा। मैंने उसे अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाया तो वह मेरी आशा के विपरीत सहसा बड़े क्रोध में आकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शान में दुःसाहस करने लगा। कहते हैं, विवश होकर, मैं उसे छोड़कर बड़े दुःखी मन के साथ, व्याकुल आत्मा के साथ अपने घर लौट आया और आदत के अनुसार जब टी वी खोला तो उस समय एम टी ए पर सूरः आले इमरान की यह आयत पढ़ी जा रही थी فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَاءُو بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ١٨٥ अर्थात- यदि उन्होंने तुझे झुठला दिया है तो तुझ से पहले भी रसूल झुठलाए गए थे। वे खुले खुले निशान और इलाही किताबें तथा रौशन (स्पष्ट) किताब लाए थे। कहते हैं, यह आयत मेरे दिल की हालत के लिए दरूद व सलाम बन गई और मुझे विश्वास हो गया कि यह कोई संयोग नहीं बल्कि ख़ुदा तआला की ओर से मेरे लिए पैग़ाम है कि रसूलों को झुठलाना तथा उनका उपहास तो होता चला आया है फिर यदि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ ऐसा हुआ तो कोई नई बात नहीं।

फिर एक महिला की घटना है जिन्हें अल्लाह तआला ने उनकी नेक प्रकृति के कारण बैअत का सामर्थ्य प्रदान किया। अफ़्रीक़ा की रहने वाली महिला हैं जो गिनी के एक बड़े नगर बूके के निकट के एक गाँव में रहती हैं। कहती हैं कि एक दिन उनके पास अहमदिया जमाअत का एक मुअल्लिम आया तथा जमाअत की तबलीग़ की तथा जलसा सालाना में शामिल होने के लिए आमन्त्रित किया। प्रत्यक्षतः पैग़ाम तो बड़ा अच्छा था, पहले मैं जलसे में शामिल होने के लिए तय्यार हुई परन्तु इस्लामी संगठनों तथा आतंकी घटनाओं के कारण मैंने सोचा कि कहीं यह जमाअत भी ऐसी ही न हो इस लिए जलसे में जाने का निश्चय छोड़ दिया किन्तु मन में यह प्रार्थना करने लगी कि ऐ ख़ुदा! यदि ये लोग सच्चे हैं तो ये हमारे गाँव में दोबारा तबलीग़ के लिए आएँ। ख़ुदा का करना ऐसा हुआ कि कुछ समय पश्चात एक तबलीग़ी टीम उनके गाँव चली गई। जब उस महिला ने हमें देखा तो ख़ुशी के कारण उसके आँसू निकल आए और कहने लगीं कि अल्लाह तआला ने मेरी दुआ सुन ली है तथा इस प्रकार पूरा परिवार बैअत करके जमाअत में दाख़िल हो गया।

गैम्बिया के अमीर साहब कहते हैं कि नया बीनी ज़िले के एक गाँव में एक महिला सनता साहिबा जमाअत की बड़ी विरोधी थीं। यह महिला खेती बाड़ी करती थीं परन्तु पिछले दो वर्षों से फ़सल ख़राब हो रही थी। कहते हैं, हमारी एक बहिन ने उनको कहा कि देखो जब से तुम जमाअत का विरोध कर रही हो उस समय से तुम्हारी फ़सल नहीं हो रही, इस लिए तुम जमाअत का विरोध छोड़कर जमाअत में शामिल हो जाओ तो अल्लाह तआला कृपा

करेगा। उन्होंने कहा, चलो परीक्षा लेती हूँ।

3

वे अपने परिवार के आठ सदस्यों सहित जमाअत में शामिल हो गईं। जमाअत में शामिल होने के बाद उन्होंने देखा कि अल्लाह तआला ने उन पर बड़ी कृपाएँ कीं। न केवल यह कि उनकी फ़सल भर पूर होने लगी बल्कि उनका एक जवान बेटा जो पिछले कई वर्षों से लापता था, उसके साथ सम्पर्क हो गया जो इटली में था। अब ये महिला हर किसी को यह कहती हैं कि अहमदिया जमाअत में शामिल हो जाओ क्यूँकि इसी में मुक्ति है।

सिलसिले के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि इस साल सावन के महीने में बासीला नगर में बड़ी भारी वर्षा हुई जिसके कारण मिशन हाउस की एक दीवार गिर गई। रात को भी निरन्तर वर्षा होती रही, भय था कि दूसरी दीवार भी गिर जाएगी। मिशन हाउस की हानि हो रही थी, बड़ा परेशान था तो मैंने दुआ की, कि ऐ अल्लाह! इस हानि को तू बैअतों के द्वारा पूरा फ़रमा दे तथा जमाअत की प्रगति में बरकत दे। कहते हैं कि मैंने दुआ पूरी भी नहीं की थी अभी कि फ़ोन की घन्टी बजने लगी। रात के बारह बजे का समय था, बारिश और बड़ी कड़क थी बिजली की। मैंने फ़ोन उठाया तो एक व्यक्ति जिसका नाम मुहम्मद था कहने लगा कि गाँव वाले बैअत करना चाहते हैं। यह गाँव मिशन हाउस से 110 कि.मी. दूर था। मुबल्लिग़ कहते हैं, मैं कुछ दिन बाद उनके पास गया तो वहाँ 198 लोग बैअत करके जमाअत में शामिल हो गए।

फिर बैनिन के मुबल्लिग़ बयान करते हैं कि हमारे मुअल्लिम अहमदी हमदी जिब्राईल साहब एक स्थानीय रेडियो पर तबलीग़ का प्रोग्राम किया करते हैं। एक दिन उनके प्रोग्राम में एक महिला की कॉल आई। कहने लगीं कि मेरे लिए आश्चर्य की बात है कि मसीह दोबारा आ चुके हैं और हमें पता ही नहीं। मैं मुसलमान हूँ तथा मेरी फ़ैमली ईसाई है और वे मुझे इस बात पर लाजवाब कर देते हैं कि मुसलमान तो स्वयं कहते हैं कि उनका मार्ग दर्शन के लिए मसीह आएँगे तब उनको हिदायत मिलेगी। उस महिला ने मुबल्लिग़ से कहा कि आप मेरे गाँव में आएँ और उनको तबलीग़ करें। अतः उस गाँव में कुछ तबलीग़ी गोष्ठियों से 227 लोगों ने बैअत करके अहमदियत क़बूल कर ली।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने विश्व के भिन्न भिन्न देशों से अहमदियत क़बूल करने के ईमान वर्धक वृत्तांत बयान फ़रमाए तथा अन्त में फ़रमाया- विरोधियों को जो आलिम हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात पर विचार करना चाहिए। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि याद रखो, यदि मुझे स्वीकार न करोगे तो फिर तुम कभी भी आने वाले मौऊद को नहीं पाओगे। फिर फ़रमाया- मेरी नसीहत है कि तक़्वा को हाथ से न दो तथा ख़ुदा तरसी से उन बातों पर विचार करो और एकान्त में सोचो और अन्ततः अल्लाह तआला से दुआएँ करो कि वह दुआओं को सुनता है। यदि नेक नीयत से दुआएँ करोगे तो वह दुआओं को सुनेगा और मार्ग दर्शन करेगा। अतः अल्लाह तआला करे कि ये लोग इस योग्य हों कि अल्लाह तआला से मार्ग दर्शन प्राप्त करने वाले हों और अल्लाह तआला उनके सीने खोले।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- नमाज़ के बाद मैं एक जनाज़ा गायब भी पढ़ाऊँगा जो मुकर्रम हाजी लूस फ़रीन हैनसन साहब का है। यह डैनिश अहमदी थे, परसों इनका निधन हुआ है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। हुज़ूर-ए-अनवर ने उनकी श्रद्धा और वफ़ा और जमाअत की सेवाओं का वर्णन फ़रमाया और फ़रमाया अल्लाह तआला मरहूम के दर्जे बुलन्द फ़रमाए तथा उनकी बीवी बच्चों को भी अहमदियत क़बूल करने तथा अहमदियत के अनुसार जीवन व्यतीत करने का सामर्थ्य प्रदान करे।